धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

1. पवित्रीकरण: स्थिति में तत्क्षण, अभ्यास में क्रमिक

जब हम यीशु मसीह को ग्रहण करते हैं और पवित्र आत्मा हम पर उतरता है, तब हम स्थिति के अनुसार पवित्र किए जाते हैं — अर्थात् परमेश्वर की दृष्टि में हमें पवित्र ठहराया जाता है (1 कुरिन्थियों 6:11)।
परंतु व्यावहारिक पवित्रीकरण — अर्थात मसीह के समान बनने की प्रक्रिया — में समय, प्रयास और आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है।

“और तुम में से कितने ऐसे थे; पर तुम धोए गए, पवित्र किए गए,
और हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के
आत्मा के द्वारा धर्मी ठहराए गए।”
— 1 कुरिन्थियों 6:11

यद्यपि पवित्र आत्मा हमें सामर्थ देता है, फिर भी हमारे जीवन से पाप की गहरी जड़ों को निकालना निरंतर आत्मसमर्पण की मांग करता है।

2. उद्धार आरंभ है, अंत नहीं

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

कई विश्वासियों को लगता है कि पवित्र आत्मा को प्राप्त करना पाप से संघर्ष का अंत है। परंतु वास्तव में यह आध्यात्मिक परिवर्तन की शुरुआत है। नया जन्म एक नया जीवन है जिसे निरंतर पोषित करना आवश्यक है।

“डर और काँप के साथ अपना उद्धार कार्यान्वित करते रहो, क्योंकि परमेश्वर ही तुम में अपनी इच्छा और अपनी प्रसन्नता के अनुसार कार्य करने की सामर्थ देता है।”
— फिलिप्पियों 2:12–13

यह “कार्य करते रहना” परमेश्वर के आत्मा के साथ सचेत सहयोग का प्रतीक है।

3. शरीर एक पात्र के रूप में: धर्म के उपयोग के लिए छुड़ाया गया

पवित्रता में बढ़ने के लिए हमें अपने शरीर को धार्मिकता के उपकरण के रूप में अर्पित करना चाहिए।
पौलुस इस रूपक का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि पवित्रीकरण केवल आत्मिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक और शारीरिक भी है — इसमें हमारे कर्मों और इच्छाओं का अनुशासन शामिल है।

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

“क्योंकि जैसे तुमने पहले अपने अंगों को अशुद्धता और अधर्म
के दास होने के लिए अर्पित किया था, वैसे ही अब उन्हें धार्मिकता के दास होने के लिए अर्पित करो, जिससे तुम पवित्र बनो।”
— रोमियों 6:19

इसका अर्थ है:

जो मुख पहले चुगली में लगा था — अब सुसमाचार सुनाने में लगे।

जो जीभ पहले शाप देने में लगी थी — अब प्रार्थना और आशीष देने में प्रयुक्त हो।

जो आँखें पहले वासना की ओर देखती थीं — अब परमेश्वर के वचन पर टिकें।

जो शरीर पहले पाप में लगा था — अब सेवा, उपवास, और आराधना में

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

लगे।

यह कानूनवाद नहीं, बल्कि मसीह के प्रति प्रेम और पवित्र बनने की लालसा से उत्पन्न आध्यात्मिक अनुशासन है।

4. प्रशिक्षण के द्वारा रूपांतरण, न कि निष्क्रियता से

पवित्रीकरण अपने आप नहीं होता। यदि शरीर और मन को धार्मिकता की ओर प्रशिक्षित नहीं किया जाता, तो पापी आदतें बनी रहती हैं — भले ही आप पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हों।
पौलुस कहते हैं कि विश्वासियों को आत्मा के द्वारा “शरीर के कर्मों को मार डालना” चाहिए (रोमियों 8:13)।

“यदि तुम आत्मा के द्वारा शरीर के कर्मों को मार डालते हो,
तो जीवित रहोगे।”
— रोमियों 8:13

पवित्र आत्मा को ग्रहण करना पर्याप्त नहीं — धार्मिकता का अभ्यास आवश्यक है।
प्रार्थना, वचन-पाठ, आराधना और सेवा — ये केवल आत्मिक अनुशासन

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

नहीं हैं, बल्कि पवित्रीकरण के साधन हैं।

5. लक्ष्य: पवित्रता के द्वारा अनन्त जीवन

पवित्रीकरण का फल केवल बदला हुआ जीवन नहीं, बल्कि अनन्त जीवन भी है।
पवित्रता वह स्वाभाविक मार्ग है जो महिमा की ओर ले जाता है।

“पर अब जब तुम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर के दास बन गए हो,
तो तुम्हारा फल पवित्रीकरण के लिए होता है, और उसका अंत
अनन्त जीवन है।”
— रोमियों 6:22

यह याद रखना आवश्यक है — हम कर्मों से उद्धार नहीं पाते, परंतु सच्चा उद्धार पाया हुआ जीवन अवश्य कर्म करता है, ताकि वह पाप से शुद्ध होकर परमेश्वर के प्रयोजन के योग्य बने (2 तीमुथियुस 2:21)।

6. सारांश: अपने शरीर को प्रशिक्षित करें, अपना जीवन रूपांतरित करें

यदि आपने मसीह को ग्रहण किया है:

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

अपने मुख को सत्य और प्रेम बोलने के लिए प्रशिक्षित करें।

अपनी आँखों को पवित्र वस्तुओं पर केंद्रित करें (फिलिप्पियों 4:8)।

अपने मन को परमेश्वर के वचन से नया होने दें (रोमियों 12:2)।

अपने शरीर को सेवा, उपवास, आराधना और पवित्रता में चलने के लिए प्रशिक्षित करें।

“मैं अपने शरीर को मारता-पीटता हूँ और उसे वश में रखता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों को प्रचार करने के बाद मैं स्वयं अयोग्य ठहरूँ।”
— 1 कुरिन्थियों 9:27

धार्मिकता के लिए अपने शरीर को अर्पित करें — ताकि आप
पवित्र किए जाएँ

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

समापन प्रार्थना:

हे प्रभु, मेरी सहायता कर कि मैं अपने शरीर और जीवन के प्रत्येक अंग को तुझे जीवित बलिदान के रूप में अर्पित करूँ — पवित्र और तुझे स्वीकार्य।
मेरे हाथों, मुख, आँखों, और हृदय को धार्मिकता में चलने के लिए प्रशिक्षित कर, ताकि मैं वास्तव में पवित्र बनूँ।
आमेन।

प्रभु आपको आशीष दें जब आप पवित्रता का अनुसरण करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp